IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत एवं मध्य प्रदेश मे महिला शिक्षा का वर्तमान परिदृश्य

DIRECTOR RESEACHER
DR. AMIR AIJAZ
SUNIL KUMAR AHIRWAR
DEPARTMENT OF GEOGRPHY
ROLL NUMBER-23113251
AMAR SHAHID CHANDRASHEKHAR AZAD
ENROL. NUMBER-23U002P0012
GOVT. POSTGRADUATE COLLEGE, NIWARI
DISTRICT NIWARI (M.P.)

प्रस्तावना- भारत मे वर्तमान में पुरूषो की तुलना मे महिलाओ की साक्षरता दर काफी कम है । देश वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार महिला साक्षरता दर (66.46%) देश की कुल साक्षरता दर (74.04%) से भी कम है। बहुत कम लडकियों का स्कूलों मे दाखिला कराया जाता है और उनमें से भी कई बीच मे ही स्कूल छोड देती है इसके अलावा कई लडकियाँ रूढिवादी सांस्कृतिक रवैये के कारण स्कूल नही जा पाती है । वर्ष 2018 मे राष्टीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग द्वारा जारी रिपोर्ट मे कहा गया था कि 15-18 वर्ष आयु वर्ग की लगभग 39.4 प्रतिशत लडकियाँ स्कूली शिक्षा हेतु किसी भी संस्थान मे पंजीकृत नही है और इनमें से अधिकतर घरेलू कार्यों मे संलग्न होती है या भीख मांगने जैसे कार्यों मे । महिला शिक्षा भारत के ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा स्थिति और अधिक गंभीर है । वर्तमान मे महिला शिक्षा ग्रामीण स्तर पर कम साक्षरता है जबकि नगरी स्तर पर महिला साक्षरता ठीक है ।

भारत मे महिला शिक्षा का इतिहास- भारत मे महिला शिक्षा का इतिहास प्राचीन वैदिक काल से जुडा हुआ है पूर्व वैदिक काल के दौरान महिलाओं को समाज मे एक प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त था और उन्हे पुरूषो के समान समाज का एक महत्वपूर्ण अंग समझा जाता था वैदिक अवधारणा के स्त्री शक्ति सिद्धान्त के अनुसार महिलाओं की देवी के रूप में पूजा शूरू हुई उदाहरण के लिये शिक्षा की देवी सरस्वती । वैदिक साहित्य मे उन महिलाओ को भी उल्लेख किया गया है जिन्होने वैदिक अध्ययन का रास्ता चुना जैसे आपाला ,घोषा,गार्गी आदि । मध्यकालीन भारत मे महिला शिक्षक की स्थिति बहुत दयनीय स्थिति मे थी, रूढिवादिता एवं पूर्वाग्रह अपने चरम पर था ब्रिटिश भारत काल में पहला ऑन-गर्ल्स बोर्डिंग स्कूल वर्ष 1821 मे दक्षिण भारत के तिरूनेलवेली मे स्थापित किया गया था वर्ष 1840 तक स्कॉटिश चर्च सोसाईटी द्वारा दक्षिण भारत मे निर्मित छह स्कूल मौजूद थे जिनमें कुल 200 लडकियों का नामांकन कराया गया था ।वर्ष 1948 में पुणे मे गर्ल्स स्कूल की शुरूआत करने वाले ज्योतिबा फुले और उनकी पत्नी सावित्री बाई फुले भारत मे भी महिला शिक्षा के क्षेत्र मे अग्रणी थे स्वतंत्रता के समय देश मे महिला साक्षरता दर काफी कम थी वर्ष 1958 मे भारत सरकार द्वारा महिला शिक्षा पर एक राष्टीय समिति का गढन किया जिसकी सभी सिफारिशे स्वीकार कर ली गयी इन सिफारिशों का सार यह था कि महिला शिक्षा को भी पुरूष शिक्षा के समानांतर पहुँचाया जाये । वर्ष 1959 मे गठित एक समिति ने लडकों एवं लडकियों के लिये एक समान पाठ्यक्रम को विभिन्न चरणों मे लागू करने की सिफारिश की थी एवं वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत मे महिला साक्षरता – प्रतिशत है ।

महिला शिक्षा हेतु भारत सरकार के प्रयास –

- **बेटी बचाओं,बेटी पढाओं योजना** – इस योजना की शुरूआत 22 जनवरी,2015 को महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य मंत्रालय, परिवार कल्याण मंत्रालय एवं मानव संसाधन विकास की एक संयुक्त पहल के रूप में समन्वित और अभिसरित प्रयासों के अंतर्गत बालिकाओं को संरक्षण और सशक्त करने के लिये की गयी थी । इस योजना के तहत कन्या भ्रूण हत्या रोकने,स्कूलों मे लडकियों की संख्या बढाने, लडकियों द्वारा स्कूल छोडने की संख्या कम करने ,शिक्षा के अधिकार के नियमों को लागू करने और लडकियों के लिये शौचालयों के निर्माण मे वृद्धि करने जैसे उद्देश्य निर्धारित किये गये थे।
- **कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय योजना**- इस योजना का शुभारम्भ वर्ष 2004 मे विशेष रूप से कम साक्षरता दर वाले क्षेत्रों मे लडकियों के लिये प्राथमिक स्तर की शिक्षा की व्यवस्था करने हेतु की गयी थी जिसका उद्देश्य देशभर मे 750 आवासीय स्कूल खोलने के प्रावधान था वर्तमान में विद्यालयों में Sc,st,obc एवं अल्पसंख्यक वर्गो की बालिकाओं के लिये 75 % सीटे आरक्षित है बाकी 25 % सीटें गरीबी रेखा नीचे जीवन यापन करने बाले परिवार की बालिकाओं के लिय है बेटी पढाओ, बेटी पढाओ योजना को सार्थक बनाने के लिये अव कस्तूबरा गाँधी विद्यालय मे अब 12 वी तक पढाई होती है ।
- **महिला समाख्या कार्यक्रम**- इसकी शुरूआत भारत सरकार द्वारा वर्ष 1989 मे राष्टी शिक्षा नीति 1986 के लक्ष्यों के अनुसार महिलाओं की शिक्षा मे सुधार व उन्हे सशक्त करने हेतु की गयी थी ।
- **सीबीएससी उडान योजना**- यह योजना केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड और मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही है इस योजना का उद्देश्य बालिकाओं को स्कूल से तकनीकी शिक्षा एवं इंजीनियरिंग महाविद्यालयों तक के सफर को आसान एवं सरल बनाना है इसमें बालिकाओं को मार्गदर्शन के साथ आर्थिक मदद भी दी जाती है इस योजना के अंतर्गत बालिकाओं को प्रवेश परीक्षा की तैयारी के लिये निःशुल्क आनलाईन पढाई वीडिओ आदि सामग्री भी उपलब्ध करायी जाती है ।
- **प्रगति छात्रवृत्ति योजना** – अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद की एक योजना है इस योजना मे केवल बालिकाओं को शिक्षा के प्रति प्रोत्साहन करने के लिये छात्रवृत्ति दी जाती है । इस योजना का मुख्य उद्देश्य बालिकाओं को शिक्षित करना है और उनके ज्ञान कौशल को बढाना है ।
- **सबला योजना**- इस योजना को राजीव गांधी किशोरी सशक्तीकरण योजना भी कहा जाता है इस योजना का आरम्भ वर्ष 2010 मे किया गया था सबला योजना के अंतर्गत किशोरियों को सक्षम बनाना आत्मविश्वास जागृत करना उन्हें आयरन पोषण,स्वास्थ्य जाँच, परिवार कल्याण आदि विषय के प्रति जागरूक करना है इसमे 11 से 18 वर्ष की जो बालिका विद्यालय नही जा सकती है उन्हे इस योजना के माध्यम से जागरूक किया जाता है ।

महिला शिक्षा हेतु मध्य प्रदेश सरकार के प्रयास-

- **मुख्यमंत्री गाँव की बेटी योजना**- इस योजना को मध्यप्रदेश शासन द्वारा वर्ष 2005 में ग्रामीण क्षेत्र की प्रतिभावान बालिकाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने की ओर प्रोत्साहित करने के लिये आर्थिक सहायता हेतु प्रारम्भ की गयी थी ।
- **कन्या साक्षरता प्रोत्साहन योजना**- यह योजना मध्यप्रदेश शासन द्वारा जनवरी 2006 मे अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति वर्ग की छात्राओं को शिक्षा हेतु प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से चलायी गयी थी इस योजना के अंतर्गत कक्षा 9 वी में प्रवेश लेने वाली छात्राओं को 1000 रूपये व कक्षा 11 वी मे प्रवेश लेने पर छात्राओं को 2000 रूपये प्रोत्साहन राशि दी जाती है ।
- **मुख्यमंत्री बालिका स्कूटी योजना**- इस योजना में मध्यप्रदेश शासन द्वारा उन सभी बालिकाओं को मुफ्त स्कूटी प्रदान की जाती है जो बालिकाएं अपने स्कूल में कक्षा 12 वी में सर्वोच्च अंक प्राप्त करेंगी प्रदेश भर के सभी स्कूलो से सर्वोच्च अंक प्राप्त करने बाली बालिका को स्कूटी प्रदान की जाती है ।

सारांश- महिलाओं को शिक्षित करना भारत मे कई सामाजिक बुराईयों जैसे – दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, एवं कार्यस्थल पर यौन उत्पीडन आदि को दूर करने की कुंजी साबित हो सकती है । यह निश्चित तौर पर देश के आर्थिक विकास मे भी सहायक होगा, क्योकि अधिक-से-अधिक शिक्षित महिलाएँ देश के श्रम बल मे हिस्सा ले पाती है। स्वास्थ्य मंत्रालय भारत सरकार के द्वारा एक सर्वेक्षण जारी किया गया है जिसमें बच्चों की पोषण स्थिति और उनकी माताओं की शिक्षा के बीच सीधा संबंध दिखाया गया है एवं महिलाएं जितनी अधिक शिक्षित होती है उनके बच्चों को उतना ही अधिक पोषण आधार मिलता है । लडकियों की शिक्षा उन्हे परिवर्तन के एजेंट के रूप में उभरने मे सक्षम बनाती है । भारतीय समाज पुरूष प्रधान समाज है महिलाओं को पुरूषों के बराबर सामाजिक दर्जा नही दिया जाता है और उन्हे उनके घरों की सीमाओं तक सीमित कर दिया जाता है । किसी महिला या बालिका को शिक्षित करना ऐसे समाजों मे एक गैर- लाभकारी उपक्रम माना जाता है, कई ग्रामीण समाजों को एक दायित्व माना जाता है, जिसे अंततः शादी के बाद दूसरे परिवार मे स्थानांतरित करना पडता है । लिंग भेदभाव कुछ उद्योगो में महिलाओं को समान साख वाले पुरूषों की तलुना मे कम वेतन दिया जाता है किसी विशेष कार्य या परियोजना के लिये उनकी दक्षता उनके पुरूष समकक्षों के मुकाबले कम होती है महिलाओं को पदोन्नति के लिये या जिम्मेदारियाँ निभाने के लिये मौटे तौर पर कम आंका जाता है इस तरह का लैंगिक भेदभाव महिलाओं को शिक्षित होने और उनकी आकांक्षाओं को प्राप्त करने से हतोत्साहित करता है। भारत की महिलाएं पुरूषों की तुलना में हिंसा और खतरे के प्रति अधिक संवेदनशील है। भारतीय समाज में महिलाओं के खिलाफ कई अपराध अभी भी प्रचलित है, जैसे दहेज, घरेलू हिंसा, देह व्यापार, यौन उत्पीडन आदि । ऐसे अपराध केवल महिलाओं को अपने घरों से बाहर निकलने और स्कूलों या यहाँ तक कि कार्यालयों मे प्रवेश करने के लिये प्रतिबंधित करते है । भारत मे महिला शिक्षा के लाभों में महिलाओं को शिक्षित करना भारतीय समाज की कई सामाजिक बुराईयों को दूर करने की कुंजी हो सकती हैं – दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या और कार्यस्थल पर यौन उत्पीडन आदि । एक शिक्षित महिला भावी पीढियों को बदल देती है। महिलाओं को शिक्षित करने से निश्चित रूप से राष्ट्र का आर्थिक विकास होगा,क्योकि अधिक महिलाएं कार्यबल में शामिल होंगी। एक शिक्षित महिला अपने परिवार और रिश्तेदारों की जरूरतों के लिये वित्तीय योगदान देगी दो कमाने बाले माता-पिता बच्चों के साथ-साथ परिवार के जीवन स्तर के लिये बेहतर विकास की संभावनाएं प्रदान करते हैं। शिक्षित महिलाओं वाला परिवार एक अच्छी सामाजिक स्थिति प्राप्त करता है और दूसरों की तुलना मे अधिक सम्मानित होता है एक शिक्षित महिला समाज में उचित रूप से परिवार की प्रशंसा करती है और उसे गौरवान्वित करती है। एक शिक्षित महिला अपने परिवार के लिये स्वास्थ्य संबंधी खतरों को पहचानती है और उनसे निपटना जानती है वह अपने बच्चों को अच्छे और बुरे में बताना, उन्हे खिलाना जानती है ।

विधि तंत्र- द्वितीयक स्रोतों जैसे पूर्व के रिसर्च पेपर व किताबों के द्वारा एवं साक्षात्कार के माध्यम से अवलोकन विधि द्वारा गूगल व इंटरनेट के माध्यम से जानकारी व आंकडे एकत्रित किये गये है ।

निष्कर्ष- भारत देश मे महिला शिक्षा का वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार 65.46 प्रतिशत है महिला शिक्षित होती है तो हमारे देश एवं अंतर्राष्टीय विकास मे मदद करता है एवं आर्थिक विकास और भारत देश के सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि मे मदद करता है महिलाओं की शिक्षा अच्छे समाज के निर्माण मे मदद करती है जो हमारे भारत देश को विकासशील से विकसित की ओर ले जाने मे मदद करेगा ।

संदर्भ सूची-

1. https://wcd.nic.in/hi DATE 15.01.2024

2.https://main.mohfw.gov.in/hi DATE 15.01.2024

3. https://www.education.gov.in DATE 15.01.2024

4. https://scholarshipportal.mp.nic.in/Public/OtherSchemes/GB DATE 15.01.2024

5.सी.आर.कोठारी (शोध पद्धिति) 2023